शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621

Vol -3
Issue -5
May
2025

मीडिया से हो रही सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जागरूकता : एक अध्ययन
(धार जिले में भील आदिवासियों के विशेष सन्दर्भ में)

पदमिनी मुवेल
शोधार्थी

डॉ. अरविन्द कुमार सिंह
सहायक प्राध्यपक एवं शोध निर्देशक
जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग,
बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ

शोध सार

भारतीय समाज विभिन्न प्रजातीय समूहों का संगम है तथा इनकी अनूठी संस्कृति को विभिन्न जनजातियाँ निराली छवि प्रदान करती हैं। भारत के वनों एवं पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करने वाले 10 करोड़ से अधिक जनजाति समुदाय के लोग हैं। मध्यप्रदेश की आदिवासी जनजातियाँ बहुत सी उपजनजातियों में विभाजित हैं, जो स्वयं अपने आप में एक जनजाति समूह बनाती हैं। इन सभी जनजातियों में कुछ सामान्य विशेषताएँ पाई जाती हैं। भारत के कुछ प्रमुख जनजातीय समूहों में गोंड, संथाल, खासी, अंगमिस, भील-भिलाला, कोल, भूटिया और महान अंडमानी शामिल हैं। इन सभी आदिवासी लोगों की अपनी संस्कृति, परंपरा, भाषा एवं जीवन शैली हैं। ये सभी जनजातियाँ आज भी सभ्यता से काफी दूर है तथा दुर्गम एवं पहाड़ी क्षेत्रों में रहती हैं। धार, झाबुआ, अलीराजपुर जिले में भील, भिलाला, बारेला की सघनता गहरी है। आदिवासी भील समुदाय एक पिछड़ी जनजाति है, इनके पास संचार के माध्यमों की पहुँच, उपलब्धता, और उपयोग कम है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य है भील आदिवासी समुदाय के लोगों में मीडिया से हो रही सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जागरूकता का अध्ययन करना, इसके अतिरिक्त भील आदिवासी समुदाय के लोगों में मीडिया के साधनों की पहुँच, उपलब्धता एवं उपयोग का अध्ययन भी किया गया है। शोध में सर्वेक्षण विधि का इस्तेमाल किया गया है। इसमें उपकरण के रूप में प्रश्नावली अनुसूची का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए 105 निदर्श का चयन किया है।

बीज शब्द

आदिवासी, भील, मीडिया, सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति, राजनैतिक स्थिति।

प्रस्तावना

भारतीय समाज विभिन्न प्रजातीय समूहों का संगम है और इनकी अनूठी संस्कृति को जनजातियाँ निराली छवि प्रदान करती है। भारत के वनों और पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करने वाले 10 करोड़ से अधिक जनजाति समुदाय के लोग है। भारत की जनगणना 2011 के अनुसार भारत में निवास कर रहे विभिन्न जनजातियों के नागरिकों की संख्या 104281034 है। यह भारत की कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत हैं। इसमें से 93819162 ग्रामीण क्षेत्रों में और 10461872 शहरी क्षेत्रों में निवास कर रहे है। भारत के 90 ऐसे जिले हैं जहाँ 50 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या जनजातीय समुदाय की है और 62 जिलों में यह संख्या 25 से 50 प्रतिशत के बीच है। आदिवासी प्रकृति पूजक होते हैं। आदिवासियों का पर्यावरण के साथ घनिष्ठ सम्बंध है। वन एवं वन्य जीवों को वनवासियों ने इन्हें अपने परिवार का अंग माना है। आदिवासी भार-भूमि तथा भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहें हैं। भारतीय संस्कृति को समृद्ध करने में आदिवासियों का महत्त्वपूर्ण योगदान भी रहा है।

मध्यप्रदेश में जनजातीय समुदाय को तीन क्षेत्रों से जाना जाता है -

1. **मध्य क्षेत्र-** जिसमे बैतूल, नर्मदापुरम, छिंदवाड़ा, सिवनी, मंडला, बालाघाट, डिंडौरी, रायसेन आदि जिल हैं। इन जिलों में बैगा, गौंड, कोरकू, कोल, परधान, भारिया और मुरिया निवास करते हैं।
2. **पश्चिम क्षेत्र-** आलीराजपुर, झाबुआ, धार, बड़वानी, खरगोन, और रतलाम जिलों से यह क्षेत्र पहचाना जाता है। इन जिलों में भील, भिलाला, बारेला, परितबा, और तड़नी आदिवासी रहते हैं।
3. **चंबल क्षेत्र-** श्योपुर, शिवपुरी, मुरैना, भिंड, गुना, ग्वालियर, दतिया आदि जिलों में सहरिया जनजाति का बसेरा है।

भील

भील शब्द की उत्पत्ति द्रविड़ भाषा के भील शब्द से हुई है जिसका अर्थ होता है -धनुष !भीलो में धनुष बाण का अत्यधिक महत्व होता है। इसलिए इनका नामकरण इसी के आधार पर किया गया है। भील बहुत शक्तिशाली, बहादुर, साहसिक व्यक्तित्व के होते हैं और ये जंगल में कंद मूल खा कर रहने वाले लोग होते हैं। इनके अपने रीति-रिवाज, परंपराएं, संस्कृति होती हैं। यह प्रकृति पूजक होते हैं। प्रकृति की पूजा करते हैं। भील आदिवासियों की मित्रता ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य सभी लोगों से एक समान रही है।

विभिन्न जनजातियों की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक समस्याएँ –

लगभग सभी जनजातियाँ पहाड़ी, जंगलों, दलदल भूमि और ऐसे स्थानों में रहती है जहाँ सड़कों का अभाव है। वर्तमान यातायात एवं संचार के साधन अभी वहाँ उपलब्ध नहीं हो पाए हैं। उनसे संपर्क करना एक कठिन कार्य होता है। यही कारण है कि वैज्ञानिक आविष्कारों के लाभों से अधिकांशतः जनजातियाँ अभी भी अपरिचित ही है। और उनकी आर्थिक, शैक्षणिक, स्वास्थ्य, सम्बन्धी एवं राजनैतिक समस्याओं का निराकरण नहीं हो पाया है।

आदिवासी क्षेत्रों की प्रमुख समस्याएँ निम्न हैं -

ऋणग्रस्तता- आदिवासी लोग अपनी गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी तथा अपनी दयनीय आर्थिक स्थिति के कारण ऋण लेने को मजबूर होते हैं। इसके कारण दूसरे लोग उनका फायदा उठाते हैं। आदिवासियों के लिए ऋणग्रस्तता एक उलझी हुई समस्या है। इनके कारण जनजातीय लोग साहूकारों के काफी शोषण का शिकार होते हैं।

भूमि हस्तांतरण- आदिवासी समाज के लोग मुख्य रूप से अपनी जीविका के लिए कृषि पर ही निर्भर होते हैं। आँकड़ों के अनुसार लगभग 90 प्रतिशत जनजातीय आबादी कृषक है। जल, जंगल, जमीन की लड़ाई लड़ने वाले आदिवासियों को अपनी भूमि से बहुत जुड़ाव एवं लगाव होता है। जनसंख्या बढ़ने के कारण भूमि की मांग में वृद्धि हुई है। साथ ही संचार व्यवस्था का फैलाव होने से समस्त जनजातीय क्षेत्र बाहरी लोगों के लिए खुल गया है। इस कारण भूमि हस्तांतरण जैसी समस्या में वृद्धि हुई है।

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -5
May
2025

गरीबी- निश्चित रूप से कहीं न कहीं आदिवासी समस्याओं का महत्वपूर्ण तत्व गरीबी से जुड़ा है। ऋणग्रस्तता हो या भूमि हस्तांतरण इन सभी के पीछे गरीबी ही मुख्य कारक है। हमारे यहाँ गरीबी का स्तर यह है कि बहुत से लोगों को मुश्किल से एक वक़्त का भोजन नसीब हो पाता है। यह हालत अनुसूचित जनजातियों के लिए और भी सोचनीय है। गरीबी की इस स्थिति के लिए बहुत से कारण जिम्मेदार है जिसमे आदिवासियों के सामाजिक और राजनैतिक हालत उसमे कही ज्यादा इसके लिए दोषी है।

बेरोजगारी- आदिवासी हमेशा दूर दराज के क्षेत्रों में मुख्य धरा के लोगों से दूर रहे है, किन्तु बाहरी लोगों के प्रवेश के कारण आज उनकी उपजाऊ ज़मीन खुद उनकी नहीं रही, साथ ही जंगलों पर अपना अधिकार समझने वाले आदिवासियों का भी इन पर अपना कोई अधिकार नहीं रहा। अशिक्षित और कम शिक्षित होने के कारण इनके रोजगार के साधन भी सीमित ही है। पूर्व में कृषि को मुख्य पेशा बनाने वाले ये लोग अब मजदूरी करने को मजबूर है।

स्वास्थ्य- आदिवासियों की एक समस्या स्वास्थ्य बनाये रखने की भी है। आमतौर पर उनका स्वास्थ्य अच्छा होता है, पर कम पढ़े- लिखे होने के कारण और जागरूकता के अभाव में आदिवासी अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान नहीं दे पाते हैं। साथ ही दूर-दराज के क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधा की कमी के कारण उनको काफी असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी तो हालात काफी मुश्किल हो जाते हैं और तब इलाज़ के अभाव में इनकी जीवन-मृत्यु तक हो जाती है।

मदिरापान- आदिवासियों में मदिरापान काफी लोकप्रिय है। चाहे वह अपने प्रमुख पेशे के रूप में हो या सेवन के लिए हो। अधिकतर आदिवासी मदिरा का निर्माण करते हैं। मदिरा बनाने के लिए वह महुए के फलों को इस्तेमाल में लाते हैं। मदिरापान सदियों से उनकी सामाजिक परंपरा का भाग रहा है। आदिवासियों के पास अपनी बनाई मदिरा पर्याप्त मात्र में होने के बावजूद सरकार द्वारा लाइसेंस प्राप्त ठेकेदारों द्वारा बाहरी मदिरा के विक्रय ने आदिवासियों को बहुत सी समस्याओं में उलझा दिया है। मदिरा ऐसा साधन है जिसके द्वारा बाहरी असामाजिक तत्व इन पिछड़े समुदायों के बीच पहुँचकर आपत्तिजनक कार्य करते हैं। साथ ही इसकी लत में पड़कर आदिवासी स्वयं को आर्थिक रूप से और भी कमजोर करते हैं।

शिक्षा- शिक्षा मानव के विकास में सहायक होती है। आदिवासी समाज का शिक्षित न होना बहुत बड़ी समस्या है। आदिवासी समाज का शिक्षा से कम सरोकार होना उनकी कई समस्या से जुड़ा हुआ है। ऋणग्रस्तता, भूमि हस्तांतरण, गरीबी, बेरोजगारी, स्वास्थ्य आदि कई समस्यायें हैं, जिस पर शिक्षा से प्रभाव पड़ता हैं। जनजातीय समूहों पर औपचारिक शिक्षा का प्रभाव बहुत कम पड़ा है।

संचार- सदियों से आदिवासी समाज के लोग घने जंगलों और दूरवर्ती क्षेत्रों में रहते आए हैं। जहां आम लोगों का पहुँचना बहुत ही मुश्किल होता है। यही कारण है कि वहाँ संचार माध्यम की कमी है। आज के परिवेश में किसी भी क्षेत्र के विकास में संचार व्यवस्था का होना अत्यंत आवश्यक है। आज जिस समाज में समाचारपत्र, रेडियो, टेलीविज़न तथा टेलीफोन जैसे संचार माध्यम का अभाव हो, वहां का विकास स्वतः ही धीमा पड़ जाता है।

साहित्य समीक्षा

साहित्य की समीक्षा करना प्रत्येक शोध कार्य का एक महत्वपूर्ण भाग होता है जिसके माध्यम से संबंधित शोध शीर्षक से जुड़े हुए विषयों के बारे में अध्ययन किया जाता है और शोध अंतराल को पूर्ण किया जाता है

डॉ वर्मा मोनिका, पाल सुरेन्द्र, (2014) द्वारा *'भारतीय जनजातीय समाज'* शोध में जनजातीय समाज के कई पहलुओं को ध्यान में रखकर कार्य किया गया है और इस शोध के परिणाम से जनजातियों की कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ सामने आई हैं। जैसे उन तक मीडिया की पहुँच, उपलब्धता, आस्थाएँ, संवाद परम्पराएँ, सामाजिक और राजनीतिक अवधारणाएँ आदि के बारे में चर्चा की गयी है।

चौधरी अर्नब, डॉ. राउल सुशांत कुमार, डॉ. मेटे जयंत कुमार (2021) ***'भारत में जनजातीय महिलाओं को उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संबंध में सशक्तीकरण'*** पर किये गये शोध में पाया गया कि आदिवासियों को सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी अपने युवाओं को ज्ञान प्रदान करने पर अधिक ध्यान केंद्रित करना होगा। देश भर में फैले आदिवासियों द्वारा संचालित शिक्षण संस्थानों के बारे में आदिवासियों को समुचित जानकारी नहीं है। उनकी आम

धारणा है कि समुदाय उन्नत शिक्षा से कोसों दूर है। अतः जनजातीय विद्यार्थियों को उचित जानकारी एवं परामर्श प्रदान करने के लिए 'मार्गदर्शन कक्ष' जैसा सूचना केन्द्र स्थापित किया जाना चाहिए।

पॉल रामकृष्णा, सामल अनीता (2022) ने ***'झारखंड की आदिवासी महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का अध्ययन'*** शोध में पाया गया की धालभूमगढ़ के बैगाओं को दो श्रेणियों में बांटा गया है। एक वर्ग मुख्य धारा के साथ आगे बढ़ रहा है और दूसरी श्रेणी मुख्य धारा से दूर है और परंपराओं के प्रति उनका झुकाव भी कम हो गया है। एसटी समुदाय में महिलाएं निचले स्तर पर हैं और अपने अधिकारों से अनजान हैं। मंडला में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएं बहुत अपर्याप्त हैं। जिले में पूर्ण टीकाकरण एवं परिवार नियोजन पर विशेष बल दिया जा रहा है। जिले में शिशु मृत्यु दर अधिक है। बुनियादी सुविधाओं की कमी, गरीबी आदि के कारण महिलाओं को उन्हें प्रदान की जाने वाली चिकित्सा सुविधाओं तक पहुंचने में समस्या का सामना करना पड़ता है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का मुख्य उददेश्य भील आदिवासी समुदाय के लोगों में मीडिया से हो रही सामाजिक, आर्थिक, और राजनैतिक जागरूकता का अध्ययन करना है। इस शोध कार्य के अन्य उददेश्य निम्न है-

1. भील आदिवासी समुदाय के लोगों में मीडिया के साधनों की उपलब्धता का अध्ययन करना।
2. भील आदिवासी समुदाय के लोगों में मीडिया के साधनों की पहुँच का अध्ययन करना।
3. भील आदिवासी समुदाय के लोगों में मीडिया के साधनों की उपयोग का अध्ययन करना।

शोध का महत्व

शोध का महत्व यह है कि इस जनजाति के सदस्यों में मीडिया से हो रही सामाजिक, आर्थिक, और राजनैतिक जागरूकता तथा उनकी समस्याओं को ज्ञात करके एवं डाटा तैयार

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3 Issue -5 May 2025

करके प्रस्तुत किया जाए, ताकि सरकार द्वारा ऐसी योजनाएँ बनाई जाये कि इनमें जागरुकता लाई जा सके एवं इनके सामाजिक, आर्थिक, और राजनैतिक स्तर को बेहतर किया जा सके।

शोध प्रविधि

शोध प्रविधि शोध के मार्गदर्शन के लिए वैज्ञानिक तरीका है। प्रस्तुत शोध में भील आदिवासी समुदाय के लोगों में मीडिया से हो रही सामाजिक, आर्थिक, और राजनैतिक जागरूकता का मूल्यांकन किया गया है। इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत को उपयोग में लाया गया है। प्राथमिक शोध में गुणात्मक एवं गणनात्मक दोनों प्रविधियों में साक्षात्कार, अनुसूची, अवलोकन, समूह परिचर्चा प्रविधि को शामिल किया गया है। इस शोध कार्य में आदिवासियों में संचार माध्यमों की उपलब्धता, पहुँच, उपयोगिता एवं उनकी संचार माध्यमों से हो रही सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक जागरूकता का पता लगाने के लिए प्रश्नों को शामिल किया गया है। इसमें कुल 21 बहुविकल्पीय प्रश्न उत्तरदाताओं से पूछे गए।

तथ्य संकलन

प्राथमिक स्रोत द्वारा प्राथमिक आँकड़ों को शोधकर्ता सबसे पहले विशेष उद्देश्य के लिए संकलित करता है। प्राथमिक स्रोत गुणात्मक एवं गणनात्मक दोनों प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

द्वितीय स्रोत इसके अंतर्गत वे सूचनाएँ व आँकड़े आते हैं, जो शोध को प्रकाशित व अप्रकाशित रिपोर्ट सांख्यकीय, पत्र डायरी, टेप, इंटरनेट से प्राप्त होते हैं। द्वितीयक स्रोत के रूप में लघु शोध प्रबंध, सरकारी रिपोर्ट, संचार पत्र-पत्रिका का अध्ययन कर तथ्यों को प्रदर्शित किया गया है।

प्रतिदर्शन तकनीक- प्रस्तुत शोध में असम्भाव्य प्रतिदर्शन तकनीक के अंतर्गत उद्देश्यपूर्ण पद्धति का उपयोग किया गया है।

प्रतिदर्श की संख्या- प्रस्तुत विषय के संबंध में शोध समस्या के अनुसार ही उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। इसके अंतर्गत शोधकर्ता ने पहले चरण में उद्देश्यपूर्ण पद्धति (Purposive

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -5
May
2025

Sampling) और आकस्मिक पद्धति (Accidental Sampling) का उपयोग किया है। नमूने के सभी चरणों में चयन प्रक्रिया भील जनजाति की आबादी पर आधारित है। पायलट सर्वेक्षण के दौरान प्राप्त जानकारी के आधार पर, झाबुआ जिले की सबसे बड़ी तहसील पेटलावाद को अध्ययन के लिए चुना गया है। इस अध्ययन में नमूने का आकर 105 घरों का है।

संकलित तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध के लिए संगृहीत किये गए आँकड़ों के बेहतर और सुनियोजित विश्लेषण के लिए एस.पी.एस.एस (SPSS) सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया है। इस पर कोडिंग करने के उपरांत आँकड़ों का विश्लेषण किया गया है। इसी आधार पर उद्देश्यों को ध्यान में रखकर निष्कर्ष निकले गए हैं एवं तथ्यों का प्रदर्शन टेबल ग्राफ एवं चार्ट द्वारा किया गया है।

जनसांख्यिकीय जानकारी

	उम्र	30-40	40-50	50-60	60 से ज्यादा
	30	25	22	23	5
%	28.60%	23.80%	21.00%	21.90%	4.80%

एकत्रित किये गए आँकड़ों के अनुसार कुल 105 उत्तरदाता है। इनमे से कुल 30(28.60%) उत्तरदाता 20-30 वर्ष के हैं। 30-40 उम्र के उत्तरदाता 25(23.80%) है। 40-50 उम्र के 22(21%) उत्तरदाता है। 50 से 60 उम्र के उत्तरदाता 23(21%) है। एवं 60 से अधिक उम्र के उत्तरदाता 5 (4.80%) है।

लिंग	पुरुष	स्त्री	अन्य
	68	37	0
%	68.80%	32.20%	

एकत्रित किये गए आँकड़ों के अनुसार 105 उत्तरदाताओं में से कुल 68(68.80%) पुरुष है। जबकि स्त्री 37(32.20%)। क्योंकि आदिवासी समुदायों में स्त्रियां कम पढ़ी लिखी होती है और गृहस्थ जीवन जीती है। घर का मुखिया पुरुष ही होता है।

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -5
May
2025

परिणाम

1.1 **व्याख्या-** इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं की सामाजिक जानकारी ली गयी जो कि उनका सामाजिक जागरूकता का पहलू दर्शाया गया है। इसमें 32 (30.50%) अशिक्षित हैं, 44 (41.90%) प्राथमिक तक पढ़े हैं। दसवीं तक पढ़े 7 (6.70%) है। बारहवी तक पढ़े 6(5.70%) है। स्नातक तक पढ़े 14 (13%) है। स्नातकोत्तर पर बहुत कम 2 (1.90%) हैं। इस प्रकार ज्यादातर भील आदिवासी लोग या तो अशिक्षित हैं या तो प्राथमिक तक पढ़े लिखे हैं। अतः भील आदिवासी लोगों का शिक्षा का स्तर कम है।

शिक्षा का स्तर		**%**
अशिक्षित	32	30.50%
प्राथमिक	44	41.90%
दसवी	7	6.70%
बारहवी	6	5.70%
स्नातक	14	13.00%
स्नातकोत्तर	2	1.90%
कुल योग	**105**	**100%**

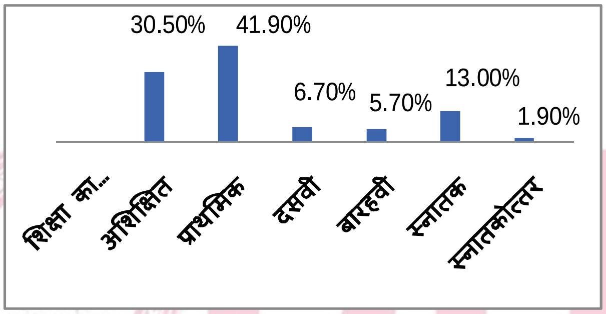

1.2 **व्याख्या-** इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं की सामाजिक एवं आर्थिक जानकारी ली गयी जो की उनका सामाजिक एवं आर्थिक पहलू दर्शाती है। इसमें झोंपड़ी में रहने वाले 29 (27.60%) हैं और कच्चे घर में रहने वाले 72 (68.60%) अधिकतम लोग हैं, पक्के घर 4 (3.80%) न्यूनतम लोगों के पास ही है। इस प्रकार अधिकतर भील आदिवासी झोंपड़ी या कच्चे घर में ही रहते है।

घर		**%**
झोंपड़ी	29	27.60%
कच्चा	72	68.60%
पक्का	4	3.80%
कुल योग	**105**	**100%**

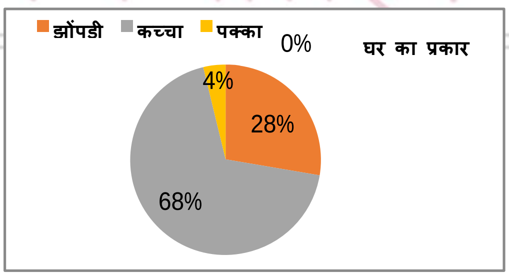

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3 Issue -5 May 2025

1.3 **व्याख्या-** इस प्रश्न में उत्तरदाताओं से पूछा गया की उनके घर में रसोई घर उपलब्ध है। इसमें 41 (39%) लोगों के घरों में रसोईघर उपलब्ध है। वहीं 64 (61%) लोगों के घरों में रसोईघर उपलब्ध नहीं हैं। इस तरह आज भी भील आदिवासियों के घरों में रसोई घर नहीं है।

रसोईघर की उपलब्धता		%
हाँ	41	39%
नहीं	64	61%
कुल योग	**105**	**100%**

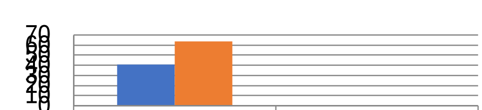

	1	2
हाँ	41	39%
नहीं	64	61%

1.4 **व्याख्या-** इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं से शौचालय उपलब्धता की ली गई है इसमें पाया गया कि 58 (55.20%) लोगों के घर में शौचालय उपलब्ध है। जबकि 47 (44.80%) लोगों के घरो में शौचालय उपलब्ध नहीं हैं। इस प्रकार आज भी भील आदिवासियों के आधे घरों में शौचालय है और आधे से कुछ हि कम घरों में शौचालय नहीं है।

शौचालय की उपलब्धता		%
हाँ	58	55.2 %
नहीं	47	44.8 %
कुल योग	105	100%

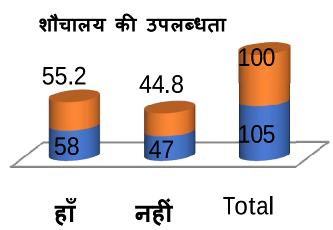

1.5 व्याख्या- इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति की जानकारी ली गयी जो की उनका आर्थिक पहलू दर्शाती है। 88 (83.80%) भील आदिवासियों के पास खुद की ज़मीन उपलब्ध है जबकि 17 (16.20%) भील आदिवासियों के पास खुद की ज़मीन उपलब्ध नहीं है। अतः भील आदिवासी ज़मीन से जुड़े लोग है।

ज़मीन की उपलब्धता		%
हाँ	88	83.80%
नहीं	17	16.20%
कुल योग	105	100%

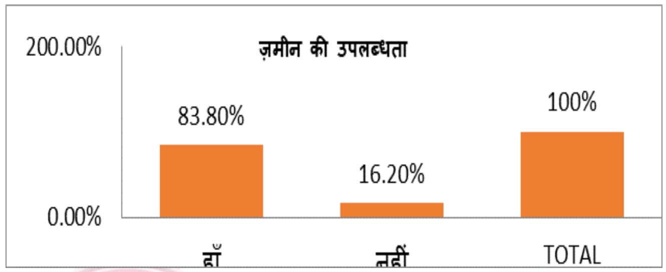

1.6 व्याख्या- इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं से भूमि संबंधी आर्थिक जानकारी ली गयी जो की उनके पास भूमि की उपलब्धता को दर्शाती है। इसमें ज्ञात हुआ कि 1-2 बीघा ज़मीन 33 (31.40%) लोगों के पास है। 31 (29.50%) लोगों के पास 2-3 बीघा ज़मीन है। 2 (1.90%) लोगों के पास 3-4 बीघा ज़मीन है। 16 (15.20%) लोगों के पास 4 बीघा से ज्यादा ज़मीन है। 23 (21.90%) लोगों के पास बिलकुल ज़मीन नहीं हैं। इस प्रकार अधिकतर भील आदिवासियों के पास 1-2 बीघा ज़मीन है। भील आदिवासियों के पास ज़मीन नहीं है या बहुत कम है। इस प्रकार उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है।

ज़मीन की संख्या		%
1-2 बीघा	33	31.40%
2-3 बीघा	31	29.50%
3-4 बीघा	2	1.90%
4 बीघा से ज्यादा	16	15.20%
बिलकुल नहीं	23	21.90%
कुल योग	105	100%

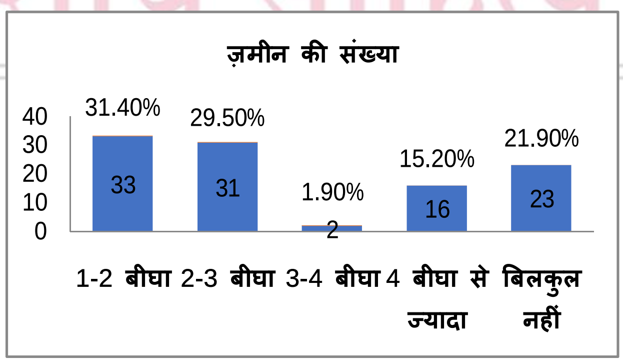

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -5
May
2025

1.7 व्याख्या- इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं की सामाजिक जानकारी ली गयी जो की उनका सामाजिक जागरूकता का पहलू दर्शाती है। इसमें 35(33%) लोग खेती करते हैं, 70(67%) लोग मजदूरी करते हैं। शिकार, नौकरी एवं व्यवसाय करने वाले लोग है ही नहीं। इस प्रकार ज्यादातर भील आदिवासी लोग या तो खेती पर या तो मजदूरी करने पर निर्भर है।

व्यवसाय		%
शिकार	0	0%
खेती	35	33%
नौकरी	0	0%
मजदूरी	70	67%
व्यवसाय	0	0%
कुल योग	**105**	**100%**

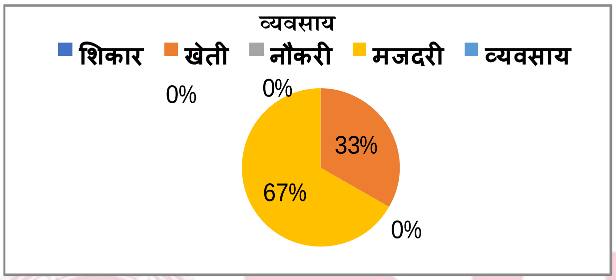

1.8 व्याख्या- इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं की आर्थिक जानकारी ली गयी जो की उनका आर्थिक पहलू दर्शाती है। इसमें 1000-2000 आय प्राप्त करने वाले 49 (47%) लोग है। 2000-3000 मासिक आय प्राप्त करने वाले 30 (28%) लोग हैं। 6 (6%) 3000-4000 मासिक आय प्राप्त करने वाले लोग हैं। 17 (16%) 4000-5000 मासिक आय प्राप्त करने लोग हैं। 3% लोग 5000 से ज्यादा आय प्राप्त करते हैं। इससे ज्ञात होता है की अधिकतर भील आदिवासी महीने में 2000-3000 आय प्राप्त करते हैं। हम कह सकते हैं कि उनकी आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर हैं।

मासिक आय		%
1000-2000	49	46.70%
2000-3000	30	28.60%
3000-4000	6	5.70%
4000-5000	17	16.20%
5000 से ज्यादा	3	2.90%
कुल योग	**105**	**100%**

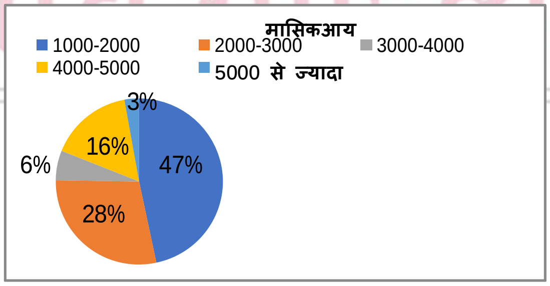

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3 Issue -5 May 2025

1.9 **व्याख्या-** इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं की सामान्य एवं आर्थिक जानकारी ली गयी जो की उनका सामाजिक एवं आर्थिक पहलू दर्शाती है। 96(91.40%) लोगों के पास बैंक खाता उपलब्ध हैं। 9 (8.60%) लोगो के पास बैंक खाता उपलब्ध नहीं हैं। इस तरह भील आदिवासियों के पास बैंक खाता है।

बैंक खाते की उपलब्धता		**%**
हाँ	96	91.40%
नहीं	9	8.60%
कुल योग	**105**	**100%**

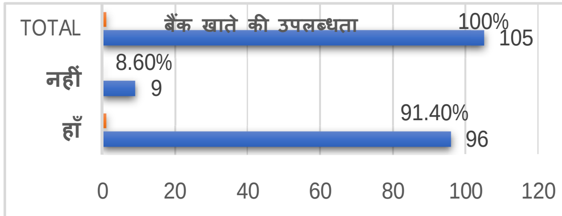

1.10 **व्याख्या-** इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं की राजनैतिक जानकारी ली गयी जो की उनका राजनैतिक जागरूकता के पहलू को दर्शाती है। इसमें 105(100%) लोगों ने वोट डाला है। परिणाम स्वरूप सभी भील आदिवासियों ने वोट डाला है और उनको वोट की जानकारी है।

वोट डालने की जानकारी		**%**
हाँ	105	100%
नहीं	0	0%
कुल योग	**105**	**100%**

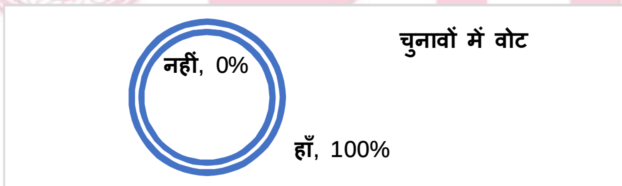

1.11 **व्याख्या-** इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं की मतदान देने संबंधी राजनैतिक जागरूकता की जानकारी ली गयी है। इसमें ज्ञात हुआ कि 105(100%) लोगों ने लोकसभा, विधानसभा, पंचायत सभी चुनावों में वोट डाला है।यह कहा जा सकता है कि सभी भील आदिवासी वोट डालने को ले करके जागरूक है।

चुनाव के प्रकार	**वोट**	**%**
लोकसभा	0	
विधानसभा	0	
पंचायत	0	
सभी	105	100%
कुल योग	**105**	**100%**

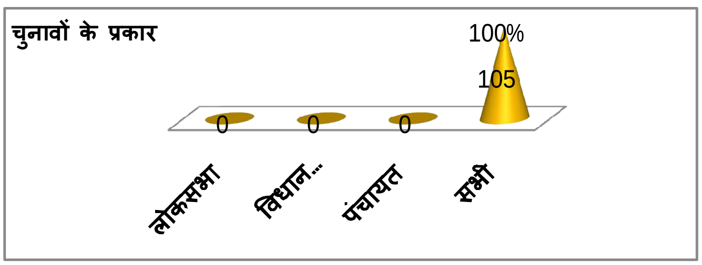

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3 Issue -5 May 2025

1.12 **व्याख्या-** इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं की पंचायती राज की समझ के बारे में राजनैतिक जानकारी ली गयी है। इसमें 52(49%) लोगों को पंचायती राज के बारे में जानकारी है। जबकि 53(51%) लोगों को पंचायती राज के बारे में जानकारी नहीं है। अतः आज भी भील आदिवासियों को पंचायती राज के बारे में जानकारी कम है परन्तु वह लोग वोट डालते हैं।

पंचायती राज के बारे में जानकारी		**%**
हाँ	52	49%
नहीं	53	51%
कुल योग	**105**	**100%**

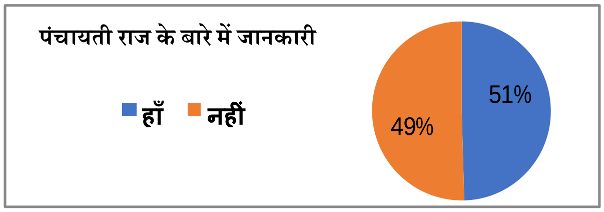

1.13 **व्याख्या-** इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं की सामाजिक जानकारी ली गयी जो की उनके क्षेत्र में एनजीओं कार्य को दर्शाती है। इसमें ज्ञात हुआ कि 105(100%) लोगों ने कहा गाँव में कोई उनके लिए काम नहीं कर रहा है। इस प्रकार सभी भील आदिवासियों के गाँव में कोई काम नहीं कर रहा है और उनको इससे मदद नहीं मिल रही है।

NGO की उपलब्धता		**%**
हाँ	0	0%
नहीं	105	100%
कुल योग	**105**	**100%**

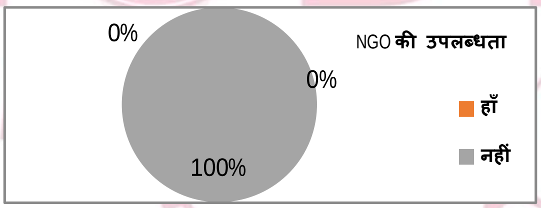

1.14 **व्याख्या-** इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं को मीडिया के माध्यम से मिल रही सूचनाओं के बारे में जानकारी ली गयी है। यह जो की उनका मीडिया से हो रही जागरूकता का पहलू दर्शाती है। इसमें 105(100%) लोगों ने कहा गाँव में मीडिया की पंहुच है। अतः आज भील आदिवासियों के गाँव में मीडिया की पूर्ण पंहुच है।

मीडिया की उपलब्धता		**%**
हाँ	105	100%
नहीं	0	0%
कुल योग	**105**	**100%**

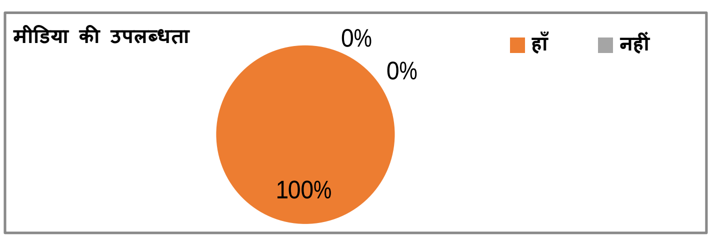

E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3 Issue -5 May 2025

1.15 व्याख्या- इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं की मीडिया माध्यम से मिल रही जानकारी ली गयी जो की उनका मीडिया से हो रही जागरूकता का पहलू दर्शाती है। इसमें 63(60%) लोगों ने कहा उनके यहाँ टीवी मीडिया माध्यम है, 41(39%) लोगों ने कहा की उनके पास कोई माध्यम नहीं है। अतः भील आदिवासियों के गाँव में मीडिया की पहुँच है और उनके घरो में अधिकतर टीवी माध्यम है। किन्तु अन्य माध्यमों की पहुँच नहीं है।

घर में मीडिया माध्यम		**%**
अख़बार	1	1.00%
रेडियो	0	
टेलीविज़न	63	60%
इन्टरनेट	0	
कोई नहीं	41	39%
कुल योग	**105**	**100%**

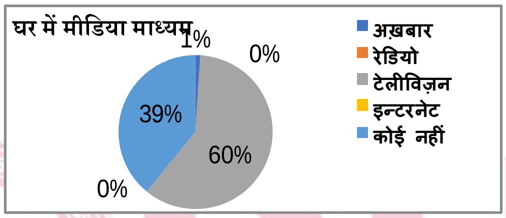

1.16 व्याख्या- इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं की मीडिया माध्यम से मिल रही जानकारी ली गयी जो कि उनको मीडिया से हो रही जागरूकता का पहलू दर्शाती है। इस प्रश्न में 5 विकल्प दिए गए जो कि लिकर्ट स्केल के मापदंड पर है। इसमें 70(67%) लोग असहमत हैं जबकि 33(31%) लोगों ने कहा की वह पूर्णतः असहमतहै। ***परिणाम स्वरूप*** भील आदिवासियों के गॉव में मीडिया के माध्यम से जो जानकारी उनको प्राप्त हो रही है, वे उस जानकारी से असहमत है या तो पूर्णतः असहमत है।

मीडिया द्वारा बताई जानकारी		**%**
सहमत	0	
असहमत	70	66.70%
पूर्णतः सहमत	1	1%
पूर्णतः असहमत	33	31%
कह नहीं सकते	1	1%

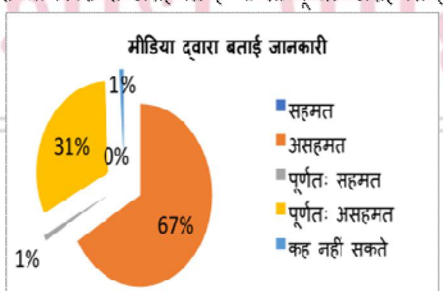

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621

Vol -3
Issue -5
May
2025

1.17 व्याख्या- इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं की मीडिया द्वारा मिल रही सुचना की जानकारी ली गयी जो कि उनको मीडिया से हो रही जागरूकता का पहलू दर्शाती है। इसमें 57(54.30%) लोगों ने कहा गाँव में मीडिया जनजातियों के मुद्दों की खबरों को सामने लाता है जबकि 48(46.70%) लोगों ने कहा गाँव में मीडिया जनजातियों के मुद्दों की खबरों को सामने नहीं लाता है। भील आदिवासियों के गाँव में मीडिया जनजातियों के मुद्दों की खबरों को अधिकतर सामने लाता है एवं अधिकतम लोग जागरूक हो रहे है और अधिकतम से कुछ कम लोगों का कहना है कि गाँव में मीडिया जनजातियों के मुद्दों की खबरों को सामने नहीं लाता है एवं वह जागरूक नहीं हो रहे हैं।

मीडिया से आदिवासियों की ख़बरे		%
हाँ	57	54.30%
नहीं	48	46.70%
कुल योग	105	100%

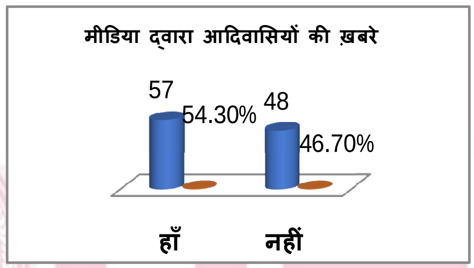

1.18 व्याख्या- इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं से पूछा गया कि सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक मुद्दों के बारे में जानकारी किन मीडिया माध्यमो से मिल रही है। इसमें 23(21.90%) लोगों ने कहा की उनको अख़बार से जानकारी मिलती है जबकि 72(68.60%) लोगों ने कहा कि उनको टीवी द्वारा जानकारी मिलती है। इस प्रकार भील आदिवासियों के गाँव में मीडिया की पहुँच है और अधिकतर घरो में टीवी माध्यम है। इससे उनको सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक विषयों की जानकारी मिलती है।

सामाजिक,आर्थिक,राजनैतिक जानकारी की प्राप्ती		%
अख़बार	23	21.90%
रेडियो	8	7.60%
टीवी	72	68.60%
इंटरनेट	0	
कही से नहीं	2	1.90%
कुल योग	**105**	**100%**

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -5
May
2025

1.19 व्याख्या- इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं की मीडिया माध्यम से मिल रही जानकारी ली गयी जो की उनका मीडिया से हो रही जागरूकता का पहलू दर्शाती है। इसमें (%60)लोगों ने कहा गाँव में मीडिया माध्यमों से बताये जा रहे सामाजिक ,आर्थिक ,राजनैतिक जानकारियों से वे जागरूक हो रहे हैं। (%40)42लोग गाँव में मीडिया से बताये जा रहे सामाजिक ,आर्थिक ,राजनैतिक बातों से जागरूक नहीं हो रहे हैं। भील आदिवासियों के गाँव में मीडिया की पहुँच है एवं गाँव में मीडिया माध्यमों से बताये जा रहे सामाजिक ,आर्थिक ,राजनैतिक मुद्दों से काफी लोग जागरूक हो रहे हैं और आधे से कुछ कम लोग जागरूक नहीं हो रहे हैं।

सामाजिक आर्थिक राजनीतिक जागरूकता		%
हाँ	63	60%
नहीं	42	40%
कुल योग	**105**	**100%**

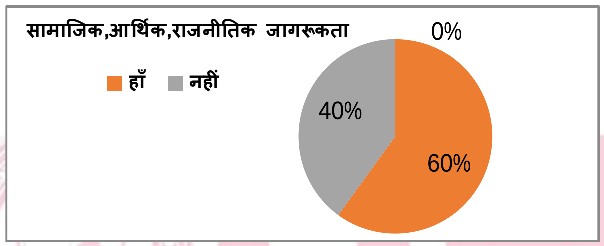

1.20 व्याख्या- इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं की मीडिया से मिल रही जानकारी ली गयी जो कि उनको मीडिया से हो रही जागरूकता का पहलू दर्शाती है। इसमें 75(71.40%) लोग असहमत हैं, 29(27.60%) लोगों ने कहा कि वह पूर्णतः असहमत है, इसका परिणाम है कि भील आदिवासियों के गाँव में मीडिया के माध्यम से जो सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक मुद्दों की जानकारी उनको प्राप्त हो रही है, वे उस जानकारी से असहमत हैं या तो पूर्णतः असहमत हैं।

विकल्प		%
सहमत	0	0.00%
असहमत	75	71.40%
पूर्णतःसहमत	0	0%
पूर्णतः असहमत	29	27.60%
कह नहीं सकते	1	1.00%
कुल योग	**105**	**100%**

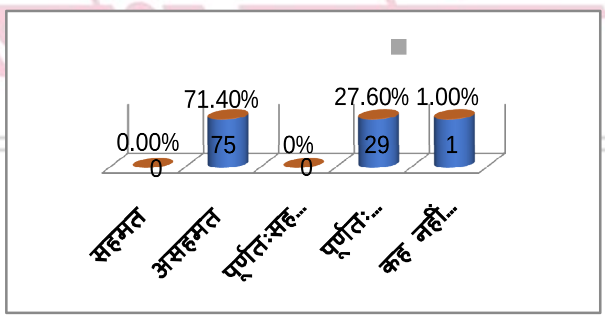

शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Impact Factor – SJIF 2024 = 3.621
Vol -3
Issue -5
May
2025

1.21 व्याख्या- इस प्रश्न के माध्यम से उत्तरदाताओं की मीडिया से मिल रही जानकारी ली गयी जो की उनका मीडिया से हो रही जागरूकता का पहलू दर्शाती है। इसमें 64(61%) लोगों का मानना है की उनके क्षेत्र में मीडिया किसानों से सम्बंधित मुद्दों को बहुत अधिक महत्व देती है। 40(37%) लोगो का मानना है कि उनके क्षेत्र में मीडिया किसानों से सम्बंधित मुद्दों को बहुत कम महत्व देती है। अतः भील आदिवासियों के गाँव में मीडिया के माध्यम से जो क्षेत्र में मीडिया किसानों से सम्बंधित मुद्दों को बहुत अधिक महत्व देती है।

मीडिया से किसानों के मुद्दों की महत्वता		**%**
अधिक	0	
बहुत अधिक	64	61%
कम	0	
बहुत कम	39	37.10%
बिलकुल नहीं	2	1.90%
कुल योग	**105**	**100%**

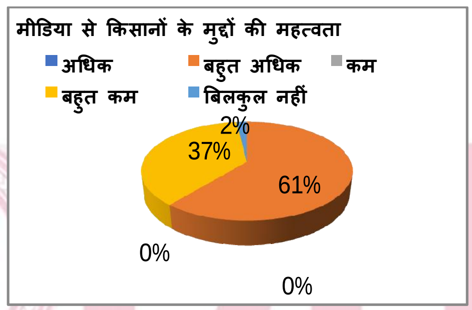

निष्कर्ष

यह शोध कार्य कई उभरते तथ्यों के साथ समाप्त होता है। जो अनुसंधान के उद्देश्यों को संतुष्ट करता है। इस शोध कार्य में "भील जनजाति" की परंपरा और संस्कृतियों पर वैश्वीकरण के प्रभावों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह परिवर्तन सीधे "भील जनजाति" की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को प्रभावित कर रहा है।

शोध के अनुसार इसकी पहचान इस प्रकार है

इस अध्ययन के माध्यम से भील जनजाति की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक पहलू को दर्शाया गया है। इसमें सामान्य, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक जानकारी उत्तरदाताओं से ली गयी है। कुछ सामान्य जानकारी के माध्यम से निकल के आया कि भील आदिवासियों के पास मीडिया के साधन तो है एवं मीडिया की उपलब्धता भी है, परन्तु उनकी शिक्षा का स्तर इतना कम है कि वह अख़बार पढ़ नहीं पाते हैं एवं उनके पास टीवी माध्यम तो है जो कि वह सिर्फ मनोरंजन के लिए देखते है। भील आदिवासियों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति

बहुत ही कमजोर है। अधिकतर भील आदिवासियों के घर में रसोईघर नहीं है और केवल 50% भील आदिवासियों के घरों में शौचालय है। वह जमीं से जुड़े लोग है इसलिए उनके पास खुद की ज़मीन है परन्तु अधिकतर 1-2 बीघा ज़मीन ही है जो काफी नहीं है। भील आदिवासियों के पास बैंक खाता है परन्तु सर्वे के दौरान पता चला कि वह सरकार की कुछ योजना के दौरान खुलवाया गया है क्योंकि उनके पास इतना पैसा ही नहीं है कि वह पैसा जमा करें। यह तथ्य दर्शाते है की आर्थिक रूप से भील आदिवासी कमजोर है। भील आदिवासियों ने सभी चुनावों में वोट डाला है, परन्तु उन्हें पंचायती राज के बारे में जानकारी नहीं है न ही उन्हें राजनैतिक समझ है। भील आदिवासियों का कहना है कि उनके गाँव में मीडिया की पहुँच है, परन्तु वह मीडिया के द्वारा बताई जा रही जानकारी से सहमत नहीं है और न ही वह मीडिया द्वारा बताई जा रही सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक जानकारियों से सहमत है न ही जागरूक हो रहे है। उनका मानना है कि मीडिया उनके गाँव में जगह नहीं बना पाया है। डिजिटल इंडिया का ज़माना है। उनके पास पूर्ण गृहस्थी के साधन ही नहीं उपलप्ध है। वे लोग आज भी खाना बनाने के लिए चूल्हे का उपयोग करते है जो कि आज के ज़माने में पीछे छूट चुका है। मोबाइल एवं इन्टरनेट का ज़माना हैं, परन्तु उनके पास मोबाइल फ़ोन तक उपलब्ध नहीं है। इंटरनेट का उपयोग कैसे करेंगे उनका यह भी कहना है कि मीडिया जनजातियों के मुद्दों को सामने ही नहीं लाता है तो वह जागरूक कैसे होंगे भील आदिवासी आज के दौर में अशिक्षित है एवं उनकी आय भी बहुत कम है। वह लोग या तो खेती करते है या मजदूरी करते है और पूर्ण रूप से विकसित नहीं है। उनके क्षेत्र में मीडिया को अपनी जगह बनानी चाहिए एवं उनको सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक मुद्दों से अवगत करना चाहिए।

6.3 सुझाव

जनजातीय समाज में शोध कार्य करते समय उनकी भाषा उनका रहन- सहन उनका खान-पान हर तरह की जानकारी पूरी तरह से पहले प्राप्त कर लेना चाहिए ताकि अध्ययन के समय परेशानी न हो। आदिवासी जनजातीय पूर्ण रूप से पिछड़ी जनजातियाँ है और इन जनजातियों के पास माध्यमों की पहुँच बहुत ही कम है। शोध के माध्यम से आदिवासी समुदाय में संचार

माध्यमों की पहुँच, उपलब्धता का अध्ययन जरुरी है एवं इन संचार माध्यमों से आदिवासी समुदाय में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक जागरूकता का पता लगाना इस शोध का प्रमुख महत्व था अथवा आगे जनजातियों के अध्ययन में यह शोध कार्य मददगार होगा।

संदर्भ सूची

1. पाटिल, डॉ. डी अशोक. भील जनजीवन और संस्कृति . मध्यप्रदेश : मध्यप्रदेश ग्रन्थ अकादमी , 1998.05 हिंदी
2. कोठारी, सी.आर. रिसर्च मेथडलॉजी. न्यू दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिकेशन, 2004. हिंदी
3. विजय शंकर उपाध्याय, डॉ. गया पाण्डेय. जनजाति विकास. भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ आकादमी मध्यांचल प्रकाशन प्रा.लि, 2010. हिंदी
4. ओझा, एन.एन. भारत की सामाजिक समस्याएँ. नई दिल्ली: क्रोनिकल बुक्स प्रा.लि, 1990
5. कोली, एन. रिसर्च मेथलाजी. आगरा: वाई. के. पब्लिशर्स, 2010. हिंदी
6. वर्मा मोनिका, पॉल सुरेन्द्र. भारतीय जनजातीय समाज. भोपाल: माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रय पत्रकारिता एवं संचार विश्व विद्यालय प्रकाशक, 2014. हिंदी
7. निनामा, कांतिलाल. भील जनजाति का सामाजिक एवं संस्कृतिक इतिहास. जोधपुर: राजस्थान ग्रंथागार प्रकाशन, 2022. 224
8. अग्रवाल, डॉ. विनीता. संचार और मीडिया शोध. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2015
9. Arbnab Chowdhury Dr. Sushanta Kumar Roul, Dr. Jayanta Kumar Mete. "Empowerment of trible women with respect to their socio-economic status of India." Journal of Legal, Ethical and Regulatory Issue Volume 24, Special Issue 6 (2021). https://www.abacademies.org/articles/empowerment-of-tribal-women-with-respect-to-their-socioeconomic-status-in-india.pdf.
10. Bharti Kumbhare, Dr. Pavan Mishra. "Vocational training regarding small scale industries can change economic conditions of M.P. tribal’s." International Journal of Creative Research, Thoughts IJCRT VOL : 2 (2014). https://ijcrt.org/papers/IJCRT1000018.pdf.
11. P V Prajina, Dr. Premsingh J. Godwin. " A Study on the social-economic status of tribes with special reference to the tribal students of Kannur district, Kerala." India

Journal of applied research vol. 4 (2014). https://www.worldwidejournals.com/indian-journal-of-applied-research-(IJAR)/article/a-study-on-the-socio-economic-status-of-tribes-with-special-reference-to-the-tribal-students-of-kannur-district-kerala/NTAxNw==/?is=1&b1=513&k=129.

12. चौहान, डॉ. शैलेंद्र. "भारत का आदिवासी समाज" देशबन्धु 14.08.2019 https://www.deshbandhu.co.in/editorial/tribal-society-of-india-77275-2.
13. रामकिशन पॉल, अनीता सामल. " झारखण्ड की आदिवासी महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक स्थिति का अध्ययन." जर्नल ऑफ एडवांसेज एंड स्कॉलरली रिसेर्चिज इन अलाइड एजुकेशन Vol:19/ Issue : 6 (2022). https://ignited.in/I/a/306588
14. सिंह, आदित्य. "जंगल बचा रहे है अलीराजपुर के आदिवासी." सप्रेस : सर्वोदय प्रेस सर्विस 22.09.2023. https://www.spsmedia.in/land-forest-and-water/the-tribals-of-alirajpur-are-saving-the-forest/.

SHODH SAHITYA शोध साहित्य